



Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"



॥ रक्षाबंधन का इतिहास ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ रक्षाबंधन का इतिहास ॥

रक्षाबंधन भारत की प्राचीन सांस्कृतिक परंपराओं में से एक है। यह पर्व मुख्य रूप से भाई-बहन के प्रेम, विश्वास और एक-दूसरे की रक्षा के संकल्प का प्रतीक माना जाता है। इसका उल्लेख विभिन्न धार्मिक ग्रंथों और लोकपरंपराओं से जुड़ी कथाओं में मिलता है।

प्राचीन समय में रक्षा सूत्र को शुभ और मंगलकारी माना जाता था। धार्मिक अनुष्ठानों में भी पुरोहित अपने यजमान की कलाई पर रक्षा सूत्र बांधते थे। समय के साथ यह परंपरा भाई-बहन के स्नेह और रक्षा के विशेष पर्व के रूप में अधिक प्रसिद्ध हुई।

भगवान श्रीकृष्ण और द्रौपदी

रक्षाबंधन से जुड़ी सबसे प्रसिद्ध कथाओं में भगवान श्रीकृष्ण और द्रौपदी की कथा है। मान्यता है कि एक बार श्रीकृष्ण की उंगली में चोट लगने पर द्रौपदी ने अपनी साड़ी का कपड़ा फाड़कर उनकी उंगली पर बांध दिया था। द्रौपदी के इस स्नेह और समर्पण से प्रसन्न होकर श्रीकृष्ण ने उसकी रक्षा करने का वचन दिया। बाद में जब द्रौपदी का चीरहरण हुआ, तब श्रीकृष्ण ने उसकी लाज की रक्षा की। यह कथा रक्षाबंधन में प्रेम, विश्वास और रक्षा के भाव को दर्शाती है।

इंद्र और इंद्राणी की कथा

एक अन्य पौराणिक मान्यता के अनुसार देवासुर संग्राम के समय देवराज इंद्र कठिन परिस्थिति में थे। तब उनकी पत्नी इंद्राणी ने मंत्रों से अभिमंत्रित रक्षा सूत्र इंद्र की कलाई पर बांधा। इसके बाद इंद्र ने युद्ध में विजय प्राप्त की। इस कथा में रक्षा सूत्र को शक्ति, सुरक्षा और विजय का प्रतीक माना गया है।

राजा बलि और माता लक्ष्मी

रक्षाबंधन से जुड़ी एक अन्य कथा भगवान विष्णु, माता लक्ष्मी और राजा बलि से संबंधित है। मान्यता है कि भगवान विष्णु राजा बलि को दिए गए वचन के कारण उनके साथ पाताल लोक में रहने लगे। माता लक्ष्मी ने राजा बलि को अपना भाई मानकर उन्हें राखी बांधी और भगवान विष्णु को अपने साथ ले जाने का आग्रह किया। राजा बलि ने भाई के रूप में उनकी इच्छा स्वीकार की। इस कथा में राखी के माध्यम से बने भाई-बहन के रिश्ते की शक्ति को दर्शाया गया है।

ऐतिहासिक परंपरा

भारतीय इतिहास में भी रक्षा सूत्र और राखी को सम्मान, मित्रता तथा सुरक्षा के प्रतीक के रूप में प्रयोग किए जाने की परंपरा के उल्लेख मिलते हैं। कई क्षेत्रों में महिलाएँ अपने भाइयों के साथ-साथ परिवार और समाज के प्रियजनों को भी रक्षा सूत्र बांधती थीं।

आज रक्षाबंधन केवल भाई द्वारा बहन की रक्षा के वचन तक सीमित नहीं है। आधुनिक समय में यह पर्व आपसी प्रेम, सम्मान, सहयोग और भावनात्मक सुरक्षा का प्रतीक बन गया है। भाई-बहन दोनों एक-दूसरे के सुख-दुःख में साथ देने और रिश्ते को मजबूत बनाए रखने का संकल्प लेते हैं।